हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर द्वारा विश्व हिन्दी दिवस 10 जनवरी 2022 के अवसर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

कार्यक्रम की रिपोर्ट

वैसे तो हिंदी का समूचा वर्तमान साहित्य ही प्रवासी लेखन है तेजेंद्र

विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित हिंदी विभाग, गुरु घासीदास की संगोष्ठी में बोलते हुए 'कथा यूके' के संस्थापक और हिंदी के वरिष्ठ कथाकार तेजेन्द्र शर्मा ने हिंदी में प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर खेद जताते हुए कहा कि आज के साहित्य, विशेषकर कविता में गांव को लेकर जो नास्टेल्जिया (पुरानी यादे) दिखाई देता है, उसका कारण ही हैं कि आज का कवि या कोई लेखक, कथाकार अपनी उन जड़ों को खो चुका है जहां उसका बचपन बीता है, जहां से उसके जीवन अनुभव और स्मृतियों का एक भरा पूरा संसार समृद्ध हुआ है। आज का लेखक उसे पीछे छोड़ आया है दूरस्थ बिहार, छत्तीसगढ़, या पंजाब का कोई लेखक जब दिल्ली में रहकर अपने गांव की कहानी लिखता है तो वह भी किसी न किसी स्तर पर प्रवासी ही होता है। लगभग दो तीन कथा संग्रह न प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पीछे "कथा यूके की साहित्यिक गोष्ठियां, उसके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श या आदिवासी विमर्श जैसे बंटवारे साहित्य के प्रभाव को सीमित कर रहे हैं। आज के लेखक को चाहिए कि साहित्य के बाजार में उछाले जा रहे इन कृत्रिम मुद्दों के बरक्स अपने जीवन अनुभव से साहित्य के विषय उठायें। अपने प्रिय लेखक जगदम्बा प्रसाद दीक्षित को उद्धृत करते हुए तेजेन्द्र शर्मा ने बताया कि उनकी कहानियों के छोटे-छोटे वाक्य आज की हिन्दी को जिस तरह प्राणवान और संप्रेषणीय बना रहे हैं।

CULTURE & कल्चर 12 पत्रिका patrika.com
बिलासपुर, बुधवार, 12 जनवरी 2022

विश्व हिन्दी दिवस: सेंट्रल यूनिवर्सिटी के हिंदी विभाग का आयोजन

वैसे तो हिंदी का समूचा वर्तमान साहित्य ही प्रवासी लेखन है-तेजेंद्र

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बिलासपुर. विश्व हिंदी दिवस पर आयोजित हिंदी विभाग, गुरु घासीदास की संगोष्ठी में बोलते हुए "कथा यू के" के संस्थापक और हिंदी के वरिष्ठ कथाकार तेजेन्द्र शर्मा ने हिंदी में प्रवासी साहित्य की अवधारणा पर खेद जताते हुए कहा कि आज के साहित्य, विशेषकर कविता में गांव को लेकर जो नास्टेल्जिया (पुरानी यादें) दिखाई देता है, उसका कारण ही है कि आज का कवि या कोई लेखक, कथाकार अपनी उन जड़ों को खो चुका है जहां उसका बचपन बीता है, जहां से उसके जीवन अनुभव और स्मृतियों का एक भरा पूरा संसार समृद्ध हुआ है। आज का लेखक उसे पीछे छोड़ आया है। दूरस्थ बिहार, छत्तीसगढ़, या पंजाब का कोई लेखक जब दिल्ली में रहकर अपने गांव की कहानी लिखता है तो वह भी किसी न किसी स्तर पर प्रवासी ही होता है। लगभग

आधा घंटे के अपने सम्मोहक व्याख्यान में कथाकार तेजेन्द्र शर्मा ने लंदन में फैलते जा रहे हिन्दी कथा साहित्य की लोकप्रियता का हवाला देते हुए बताया कि 1998 तक वहां के किसी लेखक के पास अपनी कहानियों का एक संग्रह तक नहीं था, जबकि विगत बीस वर्षों में आज कोई ऐसा लेखक लंदन में नहीं है जिसके दो- तीन कथा संग्रह न प्रकाशित हो चुके हैं। इसके पीछे "कथा यू के" की साहित्यिक गोष्ठियां, उसके प्रयास महत्वपूर्ण रहे हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श या आदिवासी विमर्श जैसे बंटवारे साहित्य के प्रभाव को सीमित कर रहे हैं। आज के लेखक को चाहिए कि साहित्य के बाजार में उछाले जा रहे इन कृत्रिम मुद्दों के बरक्स अपने जीवन अनुभव से साहित्य के विषय उठायें। अपने प्रिय लेखक जगदम्बा प्रसाद दीक्षित को उद्धृत करते हुए तेजेन्द्र शर्मा ने बताया कि उनकी कहानियों के छोटे-छोटे वाक्य आज की हिन्दी को जिस तरह प्राणवान और संप्रेषणीय बना रहे हैं, वे मेरे लेखन के प्रेरणा स्रोत रहे हैं। कला विद्यापीठ के छात्रों और अन्य विभाग के अध्यापकों की भारी उपस्थिति में संगोष्ठी का संचालन हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर देवेंद्र नाथ सिंह व धन्यवाद ज्ञापन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर मुरली मनोहर सिंह ने किया।

परिचर्चा के साथ बैंकिंग, अन्य संस्थान ने भी लिया भाग

विश्व हिंदी दिवस पर जोनल रेल कार्यालय में वर्तमान में हिंदी का स्वरूप पर विस्तार से परिचर्चा का आयोजन ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर किया गया। परिचर्चा में रेल कार्यालय से जोनल रेल मुख्यालय के साथ ही मंडलों व कारखानों के नोडल राजभाषा अधिकारियों व राजभाषा विभाग ने भाग लिया। परिचर्चा में एनटीपीसी, रेशम कीट बीज संगठन, पंजाब एंड सिंध बैंक, केंद्रीय खनन एवं ईंधन अनुसंधान संस्थान, यूनियन बैंक ऑफइंडिया, भारतीय स्टेट बैंक, बिलासपुर शहर के विभिन्न निगमों व उपक्रमों ने भाग लिया। कर्मचारियों ने कहा कि हिन्दी का प्रयोग पहुंत ही आसान हैं इसे लेकर शब्दों के चयन में पहले की अपेक्षा काफी आसान हुई है।